RESEARCH REVIEW JOURNALS
RCTRM-2018
OCT- 2018
Special Issue
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

भारतीय संगीत मे वाद्य संगति एवं उसका महत्व

Dr. Yogesh Sharma

Associate Professor & Head Post Graduate Department of Music Instrumental Govt. College for Girls Ludhiana

---

संगीत कला में अपने सौंदर्यात्मक एवं भावनात्मक गुणों के कारण जन-मन को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करते हुए रंजित करने की एक अपूर्व शक्ति विद्यमान है। इसी महान शक्ति को पहचानते हुए मानव अति प्राचीन काल से ही इस उत्कृष्ट ललित कला के विकास के लिए उत्सुक व प्रयत्नशील रहा है अति प्राचीनकाल में जब मानव को स्वर के साथ-साथ लय का भी ज्ञान हुआ तथा जब उसने इनके प्रदर्शन हेतु कुछ प्रारम्भिक वाद्यों का अविष्कार किया, तभी उसने देखा कि गायन व नृत्य के साथ उन वाद्यों द्वारा सहयोग देने से उनमें विशेष आकर्षण उत्पन्न हो जाता है। किंतु जब आदि मानव ने यह देखा कि गायन या नृत्य करते हुए उसके लिए एक से अधिक वाद्यों को स्वयं ही अपने साथ बजाना सुविधाजनक नहीं है तो उसने इस कार्य के लिए अन्य व्यक्तियों की सहायता लेना आरम्भ कर दिया। बस वहीं से संगीत में गायन और नृत्य के साथ वाद्यों द्वारा संगत करने की परम्परा आरम्भ हुई , जिसने कि इस कला को और भी चिताकर्षक तथा प्रभावशाली बना दिया। स्पष्ट है कि गायन व नृत्य के साथ विविध वाद्यों द्वारा सहयोग (संगति) देने की परम्परा अपने आरम्भ की दृष्टि से आदि काल अथवा प्रागैतिहासिक काल से जा जुड़ती है।

संगति-वाद्य: -

संगतिवाद्यों के रूप में हिंदुस्तानी संगीत पद्धति में मुख्य रूप से ताल वाद्यों के अंतर्गत तबला , प्खावज, ढोलक, खोल, नाल आदि का तथा स्वर वाद्यों के अंतर्गत , सारंगी, वायलन, तानपुरा, स्वरमण्डल, हारमोनियम इत्यादि वाद्यों का आधुनिक काल में प्रयोग होता है।

उपरोक्त विवेचन द्वारा उत्तर भारतीय संगीत पद्धति का एक स्थूल शब्द-चित्र अंकित किया जा सकता है। किसी भी संगीत पद्धति को उसका वास्तविक क्रियात्मक स्वरूप प्रदान करने में जहां उसके अंतर्गत प्रयुक्त होने वाली गायन, वादन और नृत्य शैलियां विशेष स्थान रखती है वहीं इन शैलियों के साथ प्रयोग होने वाले संगिति वाद्यों का योगदान भी महत्वपूर्ण होता है। अत: आगामी पृष्ठों में उत्तर भारतीय संगीत के संदर्भ में इसी विषय का विवेचन प्रस्तुत है।

संगति का अर्थ: -

प्रकृति की यह एक विचित्र विडम्बना है कि जिस वस्तु को मानव जितना सरल और सुबोध समझता है उसकी व्याख्या में भी उतनी ही असावधानी का प्रदर्शन करता है। संगीत के क्षेत्र में भी शास्त्र की दृष्टि से संगति के विषय को आवश्यकता से अधिक सरल मानते हुए उसके प्रति अधिकांशत: इसी प्रकार का दृष्टिकोण अपनाया जाता रहा है। उदाहरणार्थ संगति की परिभाषा देते हुए - New Webster's Dictionary of English Language 'में केवल यह कह दिया गया है कि जो वस्तु किसी अन्य वस्तु का साथ देती है।' Accompaniment "Anything that accompanies something else".[1]

परंतु संगीत की दृष्टि से यह परिभाषा इतनी व्यापक है कि इसकी व्यापकता इसकी सार्थकता को सन्देहास्पद बना देती है।

संगीत की व्यावहारिक भाषा में साधारणत: प्रयुक्त होने वाला शब्द 'संगत' मूल रूप में संस्कृत भाषा के शब्द संगति का अपभ्रंश है कभी-कभी यह शब्द अपने मूल व शुद्ध रूप में भी प्रयोग कर लिया जाता है। 'संगति का शाब्दिक अर्थ है अनुगमन, सहचर्य अथवा मिलन। संगीत के संदर्भ में संगति का अभिप्राय गायन वादन अथवा नृत्य को विभिन्न वाद्यों द्वारा सहयोग देने के अर्थ में लिया जाता है। भारतीय संगीत कोश में संगति की परिभाषा इस प्रकार दी गई है। "कण्ठ अथवा वाद्य संगीत के साथ अवनद्ध वाद्य पर ताल अथवा छंद निर्देशन वादन को संगत कहा जाता है"।[2]

किंतु संगत की यह परिभाषा पूर्ण रूपेण स्पष्ट व सार्थक नहीं मानी जा सकती क्योंकि: -

---

1 (New Webster's Dictionary of English Language P.7

2 विमल कान्तराय चौधरी, भारतीय संगीत कोष पृष्ठ - 150

1. संगीत में संगत शब्द का व्यवहार गायन वादन के साथ केवल छंद और लयताल को प्रकट करने हेतू होने वाले अवनद्ध वाद्य के प्रयोग के लिए ही नहीं किया जाता वरण कतिपय परिस्थितियों में स्वर सहयोग हेतु तत-वितत व सुषिर आदि वाद्यों के प्रयोग के लिए भी किया जाता है। इस संदर्भ में गायन वादन के साथ स्वरित की निरंतर गूंज के लिए होने वाला तानपुरे का प्रयोग विशेष रूप से उल्लेखनिय है। वह भी आवश्यक न्हीं कि लय के निदेशन के लिए एक ही वाद्य का प्रयोग किया जाए। जैसा कि उपर्युक्त परिभाषा में संकेत मिलता है अपितु इस कार्य के लिए एक से अधिक वाद्य भी प्रयोग किए जाते है।
2. लय ताल व छन्द को दर्शाने के लिए अवनद्ध वाद्यों का प्रयोग केवल गायन तथा वादन के साथ ही नहींअपितु नृत्य के साथ भी होता है।
3. गायन व नृत्य के साथ लय-ताल व छन्द आदि को प्रकट करने के लिए केवल अवनद्ध वाद्यों का प्रयोग नही होता बल्कि कुछ विशेष परिस्थितियों में झांज गंजीरा व करंताल आदि घन वाद्यों का भी प्रयोग होता है। - Oxford Student Dictionary of Current English में संगत के अंग्रेजी समानार्थक शब्द Accompaniment का अर्थ इस प्रकार दिया गया है। 'Music, usually the instrumental part, to go with voice choir or solo instrument".[3]

(एकांकी गान, सामूहिक गान अथवा एकांकी वादन के साथ प्रयुक्त होने वाला संगीत-साधारणत: वादन भाग)

यह परिभाषा भारतीय संगीत कोष की परिभाषा से कुछ अधिक स्पष्ट होते हुए भी तर्क संगत नहीं मानी जा सकती। क्योंकि इसमें भी नृत्य के साथ होने वाली संगत का संकेत नही किया गया।

अत: संगीत के संदर्भ में संगत की एक अधिक उत्तम, स्पष्ट तथा पूर्ण परिभाषा इस प्रकार की जा सकती है। गायन वादन अथवा नृत्य को अधिकाधिक प्रभावशाली तथा मनमोहक बनाने के लिए जब विभिन्न वाद्यों द्वारा अथवा गायन द्वारा सहयोग दिया जाता है, तो इस कार्य को संगति की संज्ञा दी जाती है। संगति का एक अन्य प्रयायवाची शब्द 'साथ' है।

<u>**संगति के प्रकार: -**</u>

मुख्य रूप से संगति दो प्रकार की मानी जाती है: -

1. **स्वर वाद्यों पर की जाने वाली संगति।**
2. **ताल वाद्यों पर की जाने वली संगति।**

स्पष्ट है कि प्रथम प्रकार की संगति में स्वर वाद्यों द्वारा मुख्य कलाकार अथवा कलाकारों को स्वरात्मक सहयोग दिया जाता है, जबकि दूसरी प्रकार की संगति का मूल प्रयोजन लय ताल वाद्यों द्वारा उनकी लय व ताल को निर्दिष्ट करना होता है।

इसके अतिरिक्त 'भारतीय संगीत कोष में' स्व. श्री विमल कांत राय चौधरी ने वाद्यों द्वारा की जाने वाली संगति के भी पुन: दो भेद बताए हैं। साथ-साथ की जाने वाली संगति अथवा सहसंगति तथा सवाल-जवाब की संगति। प्रथम प्रकार की संगति में कलाकार ज्यों ही कोई लयकारी आरम्भ करता है ताल वाद्य वादक भी उसके साथ उसी लय के बोल बजाने लगता है और कलाकार द्वारा प्रयुक्त विभिन्न छंदों का पूर्वानुमान से उसके साथ ही अनुकरण करते हुए अंत में उसी के साथ सम में मिलता है। दूसरी प्रकार की संगति में कलाकार जिस प्रकार की लयकारी का प्रदर्शन करता है, ताल वाद्य वादक उसे ध्यान पूर्वक सुनकर कलाकार के सम पर आने के बाद उसी छन्द की लयकारी अपने वाद्य पर प्रस्तुत करता है किंतु व्यावहारिक दृष्टि से ताल वाद्यों की संगति के इस वर्गीकरण का अधिक महत्व न होने के कारण अधिकांश विद्वान इसे मान्यता नहीं देते। वास्तव में इस वर्गीकरण में बताए गए संगति के दो प्रकारों को प्रकार न मानकर केवल संगति करने की दो विधियां मानना अधिक उचित है क्योंकि गायन-वादन व नृत्य में से प्रत्येक के साथ संगति करते समय उनमें से किसी एक पर आश्रित नहीं रहा जा सकता। अपितु आवश्यकतानुसार दोनों को प्रयोग में लाना पड़ता है। उदाहरण के लिए नृत्य में यदि अधिकांशत: का प्रयोग होता है , तो गायन वादन में भी समय-समय पर यथास्थिति इस प्रकार की संगति सुनने में आती है। इसका उदाहरण घ्रुपद-धमार और तराना गायन तथा द्रुगत वादन केर साथ होने वाली संगति में देखा जा सकता है। इसी प्रकार यदि तंत्र वादन में सवाल-जवाब की संगति का महत्व है, तो नृत्य में भी लडंत के रूप में इसका प्रयोग होता है। इन दो विधियों के अतिरिक्त

[3] A.S. Homby (Ed.), Oxford student Dictionary of current English, Page – 5

एक तीसरी विधि का भी व्यापक रूप में प्रचार है, जिसे कि संगति करने की सामान्य विधि कहा जा सकता है। इसके अतंर्गत गायन आदि के ताल वाद्य पर संगति करते समय साधारणतया सीधा ठेका लगाया जाता है किंतु आवश्यकतानुसार यथास्थिति ठेके की विभिन्न किस्मों, लगियों, टुकड़ों व तिहाइयों आदि का प्रयोग भी कर लिया जाता है। यहां इनके उल्लेख का प्रयोजन केवल यह स्पष्ट करना है कि तार्किक दृष्टि से ताल संगति के अलग-अलग प्रकार नहीं माने जा सकते। अत: मूल रूप से संगति के दो ही प्रकार स्वीकारणीय है - स्वर संगति और ताल संगति।

उत्तर भारतीय संगीत में वाद्य संगति का महत्व: -

आज भारतीय संगीत में संगति का महत्व अविस्मरणीय है। बिना संगति वाद्यों के आज किसी संगीत समाहरोह की कल्पना करना भी अस्वाभाविक ही प्रतीत होता है। अत: संगीत में संगति के इस विशिष्ट महत्व को निम्नांकित तथ्यों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है: -

1. संगीत वाद्यों द्वारा संगीत प्रदर्शन के उपयुक्त वातावरण अत्यंत सरलता सेस्थापित हो जाता है प्राय: देखा जाता है कि गायन आदि आरम्भ होने से पूर्व ही सहायक वाद्यों की ध्वनि गुंजरित होने से वातावरण में स्वर रचने बसने लगते हैं। यही संगीतात्मक वातावरण श्रोता तथा कलाकार दोनों के चित को एकाग्रचित करने में सहायक होता है, जिससे कार्यक्रम में यथेष्ट सहायता मिलती है।
2. स्वर वाद्यों पर अच्छी संगति होने से गायक की कल्पना शक्ति को बल प्राप्त होता है। इसी प्रकार वादन में भी तंत्र वादक को तोड़े आदि लेते समय यदि तबला वादक बीच-बीच में सुंदर लयकारियों व छंदों का प्रयोग करता चले, तो तंत्रकार को न केवल उन्हे तोड़ों में ढालनें का अवसर मिलता है, बल्कि उनके आधार पर उसकी कल्पना नवीन छंदों के सृजन के लिए प्रेरित होती है, इस प्रकार स्पष्ट है कि अच्छी संगति से "कल्पना शक्ति जागृत होती है। बुद्धि सूक्ष्म होती है इंद्रियां सतर्क होती हैं। इस भांति बुद्धि युक्त सतर्क कल्पना का संचार उत्पन्न होता है, जो अवश्य ही श्रोतागण को मोह लेता है।[4]
3. निरंतर गाते रहने से गायक की स्वर तंत्रियों का थकान अनुभव करना स्वाभाविक ही है किंतु संगति द्वारा उसे ऐसी स्थिति में अत्यंत अल्प-काल के लिए विश्राम का अवसर मिल जाता है क्योंकि उस समय में स्वर-वाद्य-वादक रागानुकूल आकर्षक स्वर समुदायों द्वारा श्रोताओं को रिक्तता का अनुभव नहीं होने देता।
4. शास्त्रीय नृत्य तो बिना ताल वाद्यों की संगति के लगभग निरर्थक हो जाता है। क्योंकि ऐसी स्थिति में वह अधिकांश दर्शकों को केवल शारीरिक कसरत अथवा कोरा उन्माद प्रतीत होता है किंतु स्वर व ताल वाद्यों की संगति से उन्हे उस नृत्य में अपूर्व आनंद की अनुभूति होने लगती है। विशेष रूप से कत्थक नृत्य में नर्तक की लयकारी का तबले पर साथ ही साथ अनुकरण उसे अत्यंत रोचक बना देता है।
5. कत्थक नृत्य अथवा तबला या पखावज सोलो में जहां कलाकार का प्रधान उद्देश्य आड़ी तिरछी लयकारियों द्वारा श्रोताओं को प्रभावित करना रहता है, वहां ताल की मूल लय का निरंतर चलते रहना परम आवश्यक है क्योंकि उसी से श्रोताओं को यह आभास होता है कि कलाकार अमुक समय में कौन सी लयकारी प्रदर्शित कर रहा है और कौन सी मात्रा पर चल रहा है। ऐसी स्थिति में संगति कर रहे स्वर वाद्यों पर दिया जा रहा लहरा ही मूल लय के निरंतर व स्थिर रूप से प्रकटीकरण का कार्य करता है।
6. भारतीय संगीत में लय का अथाह महत्व सर्वसम्मत है। हमारे विद्वानों का कथन है कि इसी लय के द्वारा ही "स्वर में बल एवं माधुर्य उत्पन्न होने लगता है – विलम्बित लय में स्वर झूलता है मध्य लय में स्वर में स्थिरता आती है तथा द्रुत लय में स्वर में थिरकन आ जाती है"।[5]

अत: संगीत में इस अभिन्न अंग को दर्शाने के लिए किसी न किसी लय वाद्य पर संगति अनिवार्य होती है। जिसका सुखद परिणाम हम ध्रुपद-धमार गायकी से लेकर लोक संगीत व भजन कीर्तन आदि में देख सकते हैं। अंतिम दो संगीत विधाओं में तो प्राय: यहां तक देखा जाता है कि ढोलक, झांज, मजीरा व करताल आदि की उत्तम संगति से उतपन्न उल्लास से प्रेरित होकर जन साधारण भी उसी लय में झूमने

[4] पं. जगदीशनारायण पाठक, "संगीत में ताल का महत्व" संगीत निबंध माला, पृष्ठ - 105

[5] पं. जगदीशनारायण पाठक, "संगीत में ताल का महत्व" संगीत निबंध माला, पृष्ठ - 105

व ताली बजाने को विवश हो जाते हैं और कई बार तो बड़ी तन्मयता से गायकों के साथ स्वयं भी गाने लगते हैं।

यहां यह तथ्य भी वर्णनीय है कि लय अकेली ही संगीत में रंजकता उत्पन्न करने का कारण नहीं बन सकती अपितु इसके विपरीत केवल लय का निरंतर चलते रहना तो नीरसता ही उत्पन्न करता है। अत: इस नीरसता को दूर करने के लिए ताल-चक्र में बंधकर ही लय अपने वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त करती है। परंतु ताल नामक चक्र का सामान्य श्रोता के लिए तब तक कोई अर्थ नहीं होता जब कि उसे किसी विशिष्ट ताल वाद्य द्वारा प्रकट न किया जाए। इसलिए हमारे विद्वानों ने प्रत्येक ताल के कुछ विशेष बोल निश्चित किए हैं। जिनकी ध्वनि का ताल वाद्य पर अनुकरण करते हुए सुयोग्य संगीतकार लय तथा ताल द्वारा वांछित प्रभाव की उत्पत्ति करते हुए मुख्य कलाकार को सहयोग देता है।

7. श्रेष्ठ संगति द्वारा गायन में विविधता बनाए रखने में भी विशेष सहायता मिलती है और एकरूपता नहीं आने पाती। उदाहरण के लिए ग़ज़ल गायकी में गायक के निरंतर गाने से श्रोताओं को उक्ताहट अनुभव हो सकती है किंतु प्रत्येक बार उसके 'मतला' कहने के समय जब तबला वादक द्रुत लय में विभिन्न प्रकार की लग्गियां लगाता है अथवा स्वर वाद्य वादक उसी स्वरावली पर आधारित आकर्षक टुकड़े लगाता है, तो उसमें अपूर्व विविधता का समावेश हो जाता है, जो निश्चय ही श्रोताओं को आनंदित करती हैं। इसी विविधता की आधिकाधिक सृष्टि के उद्देश्य से ही चित्रपट संगीत निर्देशक सदा नवीन वाद्यों की खोज में रहते हैं, जिनसे उनके गीत अधिकाधिक वैचित्रयपूर्ण बन सकें।
8. संगति के द्वारा कलाकार के आत्म-विश्वास को भी बल प्राप्त होता है और उसको श्रोताओं के सामने खुलकर कला प्रदर्शन करने की प्रेरणा मिलती है।
9. भारतीय संगीत में वाद्य संगति के सम्बंध में एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि यहां गायन वादन के साथ आधार स्वर अथवा स्वरों की निरंतर गूंज (Drone) का अत्याधिक महत्व है, क्योंकि सप्तक के सभी स्वर अपने आधार स्वर से किसी न किसी रूप में सुसम्बंध रहते हैं। साथ ही हमारे प्राचीन विद्वान संगीत श्रवण की उपमा समाधि से दिया करते थे तथा उनका यह विचार था कि आधार-स्वर की निरंतर गूंज इस समाधी को अटूट बनाए रखती है अर्थात कलाकार के साथ-साथ श्रोताओं को एकाग्रता बनाए रखने में अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।

अधार स्वर की इस गूंज को निरंतर बनाए रखने का यह महत्वपूर्ण कार्य सहायक वाद्यों (मुख्यत: तानपुरा) द्वारा ही पूर्ण किया जाता है। जो कि भारतीय संगीत की एक व्यक्तिगत विशेषता है। तानपुरे के द्वारा कलाकार को केवल आधार स्वर का ही सहयोग नहीं दिया जाता, अपितु यह वाद्य अन्य स्वरों को भी सहायक नादों के रूप में उत्पन्न करके कलाकार के लिए एक प्रकार से पथप्रदर्शक का कार्य करता है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि "मधुर ध्वनि व गति ही संगीत कला के मूल आधार हैं संगीतात्मक ध्वनि तथा गति को प्रकट करने के उपकरण को वाद्य कहते हैं"।[6]

<u>उपसंहार: -</u>

इस प्रकार जब इन तत्वों के प्रकटीकरण में कलाकार को अन्य वाद्यों का पुष्ट सहयोग प्राप्त हो जाता है तो निश्चय ही उसका कला-प्रदर्शन मुखरित हो उठता है। यह सहयोग भले ही स्वराधार के रूप में हो, स्वर संगति के रूप में हो अथवा लय-ताल की संगति के रूप में इसका परिणाम सदैव ही सुखदायी होता है। यही कारण है कि प्राचीन काल में वाद्यों का उपयोग एकांकी वादन की अपेक्षा संगति के लिए अधिक होता आया है।

<u>संदर्भग्रंथ सूची: -</u>

1. कासलीवाल सुनीरा, सुर-ताल, संगीत परक-विविध सामग्री का संग्रह, नई दिल्ली: कनिष्का पब्लिशर्स डिस्त्रीब्यूटर्स, 2002
2. कुलकर्णी वसुधा, भारतीय संगीत एवं मनोविज्ञान , जोधपुर: राजस्थानी ग्रंथागार , प्रथम संस्करण , 1990
3. गर्ग लक्ष्मीनारायण (स.पा.) , संगीत निबंधावली , हाथरस: संगीत कार्यालय, 1978
4. चौधरी, विमल कांतराय, (स.पा.), भारतीय संगीत कोष, (नई दिल्ली) भारतीय ज्ञान पीठ प्रकाशन
5. पाठक जगदीश नारायण , संगीत निबंध माला , इल्हाबाद: पाठक पब्लिकेशन 1963
6. मिश्र लालमणि (डा.), भारतीय संगीत वाद्य , नई दिल्ली: भारतीय ज्ञान पीठ प्रकाशन, 1973

[6] डॉ. लालमणि मिश्र, भारतीय संगीत वाद्य, पृष्ठ - 3

7. Hornby, A.S. (Ed.), Oxford Student's Dictionary of Current English, New Delhi: Oxford University Press, 1981.
8. Webester Noah, New Webester's Dictionary of the English Language, (U.S.A.) Daim Publishing Company, 1971.